بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-04.03.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. को मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से वह स्तर मिला कि सारी दुनिया उनका आदर पूर्वक नाम लेती है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ा-ए-राशिद अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के सद्गुणों का वर्णन। विश्व की चिंता जनक स्थिति के कारण दरूद शरीफ़ के जाप एवं इस्तिग़फ़ार करने तथा कुछ दुआएँ करने की प्रेणा।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 4 मार्च 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- तबरी के इतिहास में पहले ख़लीफ़-ए-राशिद के चयन के अवसर पर हज़रत हबाब बिन मुंज़िर रज़ी. का सुझाव था कि चूँकि क़ुरैश में से मुहाजिर मदीना के अन्सार की शरण में हैं इस लिए इस मामले में अन्सार का यह निर्णय स्वीकार किया जाए कि एक अमीर अन्सार में से और एक अमीर क़ुरैश मुहाजिरों में से हो, जबकि बशीर बिन सअद रज़ी. का सुझाव था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ुरैश जाति नेतृत्व करने की अधिक अधिकारी तथा योग्य है परन्तु सुनन कुबरा लिन्निसाई नामक पुस्तक में है कि इस अवसर पर हज़रत उमर रज़ी. ने फ़रमाया कि एक मियान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं और उन्होंने हज़रत अबू बकर रज़ी. का हाथ पकड़ कर उनकी तीन विशेषताओं का परिचय दिया कि- اِذۡ ہُمَا فِی الۡغَارِ اِذۡ یَقُوۡلُ لِصَاحِبِہٖ لَا تَحۡزَنۡ اِنَّ اللّٰہَ مَعَنَا अर्थात- और जब वे दोनों गुफा में थे तो वह अपने साथी से कह रहा था कि दुःखी न होना, निश्चित ही अल्लाह हमारे साथ है, तो उस अवसर पर गुफा में कौन दो व्यक्ति थे? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथी कौन था? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और किसके साथ थे? यह कह कर हज़रत उमर रज़ी. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. की बैअत कर ली तो पूरी क़ौम ने भी हज़रत अबू बकर रज़ी. की बैअत कर ली, यह बैअत बैअते सक़ीफ़ः तथा बैअते ख़ास्सा के नाम से भी प्रसिद्ध है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी. बयान करते हैं कि बैअत के दूसरे दिन हज़रत उमर रज़ी. ने तक़रीर करते हुए कहा कि ऐ लोगो! मैंने कहा था कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन नहीं हुआ किन्तु मैंने इस बात का वर्णन अल्लाह की किताब में कहीं नहीं पाया और न ही नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे इसका उपदेश दिया था परन्तु मैं समझता था कि हम पहले देहान्त पा जाएँगे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हममें से अन्तिम होंगे, परन्तु ख़ुदा तआला ने तुम्हारे मामलात को एक ऐसे आदमी के हाथों में दे दिया है जो तुममें सर्वाधिक अच्छा है और जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथी है और ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ की पुष्टि करने वाले हैं, अतः उठो तथा उनकी बैअत करो। अतः लोगों ने बैअते सक़ीफ़ः के बाद हज़रत अबू बकर रज़ी. की बैअत की।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने सार्वजनिक बैअत वाले दिन एक सम्बोधन किया और फ़रमाया कि ऐ लोगो! निःसन्देह मैं तुम पर निगरान नियुक्त किया गया हूँ किन्तु मैं तुम सबसे अच्छा नहीं हूँ, यदि मैं अच्छा काम करूँ तो मेरे साथ सहयोग करो तथा पथ से भटक जाऊँ तो मुझे सीधा कर दो, यदि मैं अल्लाह तथा उसके रसूल का आज्ञा पालन करूँ तो मेरा अनुसरण करो तथा यदि मैं अवज्ञा करूँ तो तुम पर मेरा आज्ञा पालन अनिवार्य नहीं।

हज़रत अली रज़ी. की हज़रत अबू बकर रज़ी. की बैअत के बारे में विभिन्न रिवायतें मिलती हैं। अल्लामा इब्ने कसीर कहते हैं हज़रत अली रज़ी. ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के पश्चात पहले अथवा दूसरे दिन हज़रत अबू बकर रज़ी. की बैअत कर ली थी। हज़रत अली रज़ी. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को कभी नहीं छोड़ा और न ही हज़रत अबू बकर रज़ी. के पीछे नमाज़ अदा करना उन्होंने छोड़ा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ी. ने पहले पहले हज़रत अबू बकर रज़ी. की बैअत से भी बचने का प्रयास किया था परन्तु फिर ख़ुदा जाने एक बार क्या सूझा कि पगड़ी भी नहीं बांधी तथा तुरन्त टोपी पहने हुए ही बैअत करने आ गए और पगड़ी बाद में मंगवाइ। ऐसा लगता है कि उनके दिल में विचार आ गया होगा कि यह तो बड़ा पाप है, इसी लिए इतनी जल्दी की।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. मक्का के एक साधारण से व्यापारी थे किन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण से आप रज़ी. को वह स्तर मिला कि आज पूरा विश्व उनका नाम आदर सम्मान के साथ लेता है। आप रज़ी. के वालिद को किसी ने जाकर सूचना दी कि मुबारक हो, अबू बकर ख़लीफ़ः हो गया है। पहले तो उनको विश्वास नहीं हुआ परन्तु जब उनको विश्वास दिलाया गया तो उन्होंने कहा कि अल्लाहु अकबर! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी क्या शान है कि अबुल क़हाफ़ा के बेटे को अरबों ने अपना सरदार मान लिया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. फ़रमाते हैं कि निश्चित रूप में समझो कि अल्लाह तआला किसी का उपकार अपने ज़िम्मे नहीं रखता, वह उससे हज़ारों लाखों गुणा अधिक देता है जितना कोई ख़ुदा के लिए देता है। अबू बकर रज़ी. ने मक्का में एक छोटा सा कोठा छोड़ा था लेकिन ख़ुदा ने उसके बदले में उसे एक देश का मालिक बना दिया।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने एक बार सपने में देखा कि उनके शरीर पर एक यमन की चादर का जोड़ा है परन्तु उसके सीने पर दो धब्बे हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस सपने के विषय में फ़रमाया- यमनी जोड़े का अर्थ यह है तुम्हें अच्छी संतान मिलेगी तथा दो धब्बों का अभिप्रायः दो साल का नेतृत्व है, अर्थात तुम दो साल तक मुसलमानों के हाकिम रहोगे।

ख़िलाफ़त के चुनाव के बाद हज़रत अबू बकर रज़ी. के व्यक्तिगत ख़र्चों के लिए छः हज़ार दर्हम वार्षिक का वज़ीफ़ा (आजीविका के लिए अनुदान की धन राशि) देना स्वीकार किया गया किन्तु जब हज़रत अबू बकर रज़ी. के निधन का समय आया तो उन्होंने अपने रिश्तेदारों को आदेश दिया कि जो वज़ीफ़ा मैंने बैतुल माल से लिया है वह पूरे का पूरा वापस कर दिया जाए तथा उसकी अदायगी के लिए मेरी अमुक अमुक सम्पत्ति बेच दी जाए। अतः जब हज़रत उमर रज़ी. ख़लीफ़ा हुए तथा वह धन राशि उनके पास पहुंची तो वे रो पड़े और कहा- ऐ अबू बकर सिद्दीक़! तुमन अपने उत्तराधिकारी पर भारी बोझ डाल दिया है।

चारों ख़ुल्फ़ाए राशिदीन में से हज़रत अबू बकर रज़ी. का दो साल तीन महीने का संक्षिप्त दौरे ख़िलाफ़त एक स्वर्ण दौर कहलाने के योग्य था क्यूँकि हज़रत अबू बकर रज़ी. की विशेष दलेरी, बहादुरी तथा सूझ बूझ के कारण थोड़ी सी अवधि में भयावह शंकाओं के सारे बादल छट गए तथा सारे भय शांति में बदल गए।

हज़रत अबू बकर रज़ी. को आरम्भ में ही पाँच प्रकार के कष्ट दुःख एवं समस्यओं का सामना करना पड़ा। 1- आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त तथा जुदाई का दुःख। 2- ख़िलाफ़त के चुनाव तथा उम्मत में उपद्रव एवं मतभेद का भय। 3- उसामा के नेतृत्व में सेना भिजवाने की समस्या। 4- मुसलमान कहलाते हुए ज़कात देने से इंकार तथा मदीना पर हमला करने वाले, जिसको इतिहास में ज़कात रोकने वालों का उपद्रव कहा जाता है, तथा 5- इस्लाम से विमुख होने वालों का उपद्रव अर्थात ऐसे दुष्ट एवं उपद्रवी जिन्होंने खुल्लम खुल्ला बग़ावत तथा युद्ध की घोषणा कर दी, इस बग़ावत में वे शामिल हो गए जिन्होंने अपने तौर पर नबी होने का दावा भी किया। भय की इन सारी परिस्थतियों में कठिनाईयों तथा विरोध का घटन करने में अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को सफ़लता प्रदान की।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को हज़रत मूसा अलै. के पहले ख़लीफ़ः यूशु बिन नून के समान कहते हुए हज़रत अबू बकर रज़ी. को पेश आने वाली समस्याओं, कठिनाईयों तथा विजय एवं सफलताओं का वर्णन करते हुए बयान फ़रमाया कि- وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ की आयत से सिलसिला ख़िलाफ़ते मूसवियः तथा सिलसिला ख़िलाफ़ते मुहम्मदियः में समरूपता का प्रमाण मिलता है। समरूप होने का पहला आधार डालने वाले हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा समरूपता का अन्तिम नमूना ज़ाहिर करने वाला मसीह ख़ातमुल ख़ुल्फ़ा अर्थात मुहम्मदिया सिलसिलाए ख़िलाफ़त का सबसे अन्तिम ख़लीफ़ः है। ख़ुदा ने यूशु बिन नून और हज़रत अबू बकर रज़ी. की समानता को दोनों ख़िलाफ़तों के प्रथम सिलसिले में तथा हज़रत

ईसा बिन मरयम और इस उम्मत के मसीह मौऊद अलै. की समरूपता को दोनों ख़िलाफ़तों के अन्तिम सिलसिले में उज्जवल रूप से दिखा दिया। जिस प्रकार बनी इसराईल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के निधन के बाद युशु बिन नून की बातों को उपयुक्त मान गए थे तथा सबने अपने आज्ञा पालन की भावना को अभिव्यक्ति किया था, यही घटना हज़रत अबू बकर रज़ी. के सामने आई तथा सबने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाई में आँसू बहा कर मन की रूचि से ख़िलाफ़त को स्वीकार कर लिया।

आयत इस्तिख़लाफ़ के संदर्भ में हज़रत मसोह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने मोमिनों को, जो नेक हैं वादा दे रखा है कि इसी ख़िलाफ़त की श्रंखला के अनुसार सिलसिला स्थापित करेगा जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद स्थापित किया था तथा दीने इस्लाम को धरती पर जमा देगा तथा इसकी जड़ लगा देगा और भय की अवस्था को अमन की अवस्था से बदल देगा। इस आयत में स्पष्ट रूप से फ़रमा दिया है कि भय का दौर भी आएगा तथा शांति भंग होगी परन्तु ख़ुदा इस भय के ज़माने को फिर अमन के साथ बदल देगा, अतः यही भय युशु बिन नून के सामने भी आया था तथा जैसा कि उसको ख़ुदा के कलाम द्वारा आश्वासन दिया गया, ऐसा ही हज़रत अबू बकर रज़ी. को भी ख़ुदा के कलाम से आश्वासन दिया गया।

हुज़ूर अनवर ने दुनिया की मौजूदा भयावह स्थिति के लिए दुआ की प्रेरणा देते हुए फ़रमाया कि अब तो परमाणु युद्ध की भी धमकियाँ दी जाने लगी हैं। पहले भी कई बार कह चुका हूँ कि इसके परिणाम अगली पीढ़ियों को भी भुगतने पड़ेंगे। अल्लाह तआला ही है जो इन लोगों को बुद्धि दे, इन दिनों में दरूद भी बहुत पढ़ें, इस्तिग़फ़ार भी बहुत करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक समय पर विशेष रूप से जमाअत को उपदेश दिया था कि रकूअ के बाद खड़े होकर رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ की दुआ किया करें, तो उसको भी आजकल अत्यधिक पढ़ने की आवश्यकता है। अल्लाह तआला नेक कर्म करने का सामर्थ्य भी प्रदान करे तथा हर प्रकार के आग की यातना से सबको बचाए, आमीन।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में मुकर्रम अबुल फ़रज अलहसनी साहब ऑफ़ शाम के निधन पर उनका सद्वर्णन करते हुए उनकी जमाअती सेवाओं का भी वर्णन फ़रमाया तथा जुम्अः की नमाज़ के बाद उनके जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा भी फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131